

भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बस्ती
BHARAT RATNA SARDAR VALLABH BHAI PATEL
RAJKIYA ENGINEERING COLLEGE BASTI
बांसी रोड, बस्ती (उ० प्र०), पिन- 272002

“चेतना एवं कल्याण”

पर

सेमिनार

मीडिया रिपोर्ट

दिनांक: 25 मार्च 2026

स्थान: सेमिनार हॉल

भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, बस्ती द्वारा एक प्रेरणादायक पहल का आयोजन किया गया, जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता बल्कि छात्रों के व्यक्तिगत विकास और भावनात्मक कल्याण को भी प्रोत्साहित करने की साझा दृष्टि को दर्शाता है। युवा इंजीनियरों के मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए “चेतना एवं कल्याण” विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम इवॉल्व संघ फाउंडेशन के सहयोग से कॉलेज के सेमिनार हॉल में आयोजित हुआ।

इस सेमिनार में छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को नवाचार की बाहरी दुनिया और आत्म-जागरूकता, संतुलन तथा वास्तविक कल्याण की आंतरिक दुनिया के बीच संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित करना था। यह पहल छात्रों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके आंतरिक विकास और भावनात्मक संतुलन को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रही।

यह सेमिनार कॉलेज के निदेशक प्रो० कुलदीप सहाय के संरक्षण में तथा संयोजक श्री रणितेश गुप्ता एवं श्री राजकुमार सिंह के निर्देशन में आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री यशवंत कुमार यादव की सक्रिय भूमिका भी सराहनीय रही।

कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथि वक्ताओं का सम्मान किया गया, जिससे एक सकारात्मक और सम्मानपूर्ण वातावरण का निर्माण हुआ। इसके पश्चात आकाश शुक्ला (सीएसई, द्वितीय वर्ष) द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों के महत्व को रेखांकित किया।

इसके बाद मुख्य वक्ताओं का परिचय कराया गया, जिनमें श्री ऋषभ पांडेय, निदेशक, आदि युवान फाउंडेशन तथा श्री संदीप कुमार खरे, अंतरिक्ष एवं उपग्रह प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत एक शांत और सकारात्मक वातावरण में हुई। छात्र स्वयं को बेहतर समझने और जीवन के गहरे पहलुओं को जानने की उत्सुकता के साथ एकत्रित हुए।


25/03/2026


25/03/2026

वक्ता की प्रस्तुति का मुख्य केंद्र यह विचार था कि कल्याण कोई स्थायी गुण नहीं, बल्कि एक कौशल है। जब हम अपनी चेतना की प्रकृति को समझते हैं—यानी हम दुनिया और अपनी आंतरिक स्थितियों को कैसे अनुभव करते हैं—तो हम अपनी खुशी और मानसिक दृढ़ता के स्तर को सक्रिय रूप से बदल सकते हैं।

ऋषभ सर ने बताया कि जैसे-जैसे हम जीवन में आगे बढ़ते हैं, हमारी खुशी के स्रोत बदलते रहते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भौतिक या बाहरी चीजों से मिलने वाली खुशी अस्थायी और क्षणिक होती है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वास्तविक खुशी शारीरिक आकर्षण या बाहरी सुंदरता पर निर्भर नहीं करती। इस वार्ता का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह था कि “खुशी हमारे भीतर होती है”। यह इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हम क्या प्राप्त करते हैं या दुनिया में कितना आगे बढ़ते हैं, बल्कि यह एक मानसिक अवस्था है, जो बाहरी परिस्थितियों से स्वतंत्र होती है।

खरे सर ने मानव व्यवहार और मानसिक अवस्थाओं को तीन प्रमुख गुणों में वर्गीकृत किया: सत्त्व, रजस और तमस। उन्होंने बताया कि यद्यपि मनुष्य और पशु दोनों में कुछ मूलभूत जैविक प्रवृत्तियाँ समान होती हैं, लेकिन आधुनिक सामाजिक संरचनाओं ने मनुष्यों पर विशिष्ट मानसिक दबाव भी उत्पन्न किए हैं।

उन्होंने समझाया कि “आंतरिक” खुशी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को इन तीन गुणों के प्रभावों को समझते हुए, अज्ञान (तमस) और अत्यधिक सक्रियता/अशांति (रजस) से ऊपर उठकर सत्त्व (शांति और स्पष्टता) की अवस्था की ओर बढ़ना चाहिए।

उन्होंने यह भी बताया कि रजस (अशांति और असंतोष) से सत्त्व (शांति और स्पष्टता) की ओर बढ़ने के लिए सचेत प्रयास आवश्यक हैं। इसके लिए व्यक्ति को अपने जीवनशैली में सकारात्मक परिवर्तन करने होते हैं, जैसे—संतुलित आहार, अच्छी पुस्तकों का अध्ययन, ध्यान का अभ्यास और समय का अनुशासित प्रबंधन।

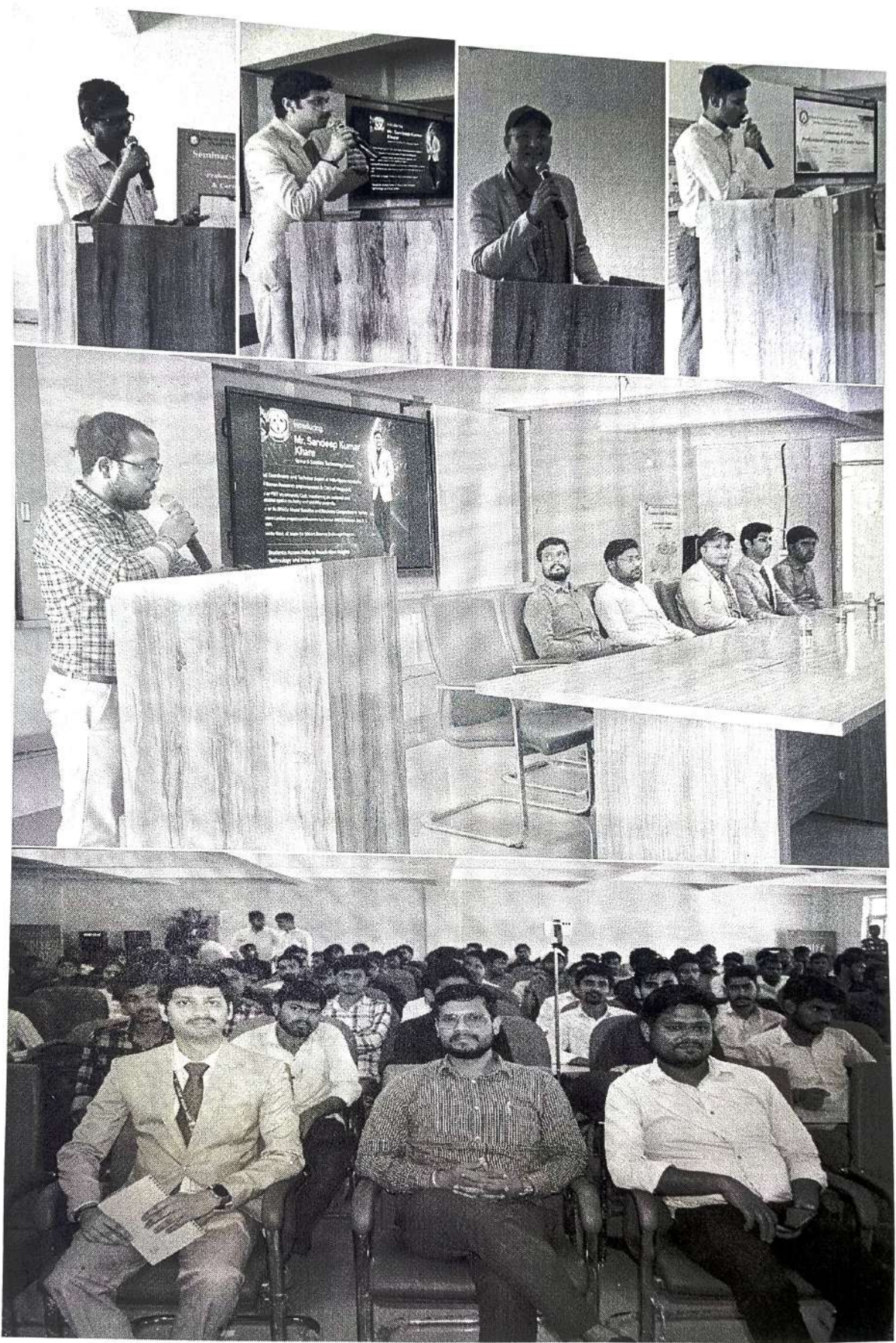
फीडबैक सत्र सेमिनार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। छात्रों ने अपनी प्रतिक्रियाएँ साझा कीं और बताया कि इस सत्र ने उनकी समझ को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया तथा उन्हें जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण मिला। कार्यक्रम के दौरान संसाधन व्यक्तियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समापन सत्र में दिनभर के मुख्य बिंदुओं को दोहराया गया और छात्रों को इन सीखों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया, जिसमें सभी सहयोगियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया।

यह सेमिनार अत्यंत सफल एवं सकारात्मक रूप से संपन्न हुआ। इसने छात्रों को यह संदेश दिया कि वास्तविक सफलता केवल शैक्षणिक उपलब्धियों में ही नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और मानसिक कल्याण में भी निहित है।

A handwritten signature in blue ink, followed by the date 25/03/2026. The signature is stylized and appears to be 'Rajeshwar'.

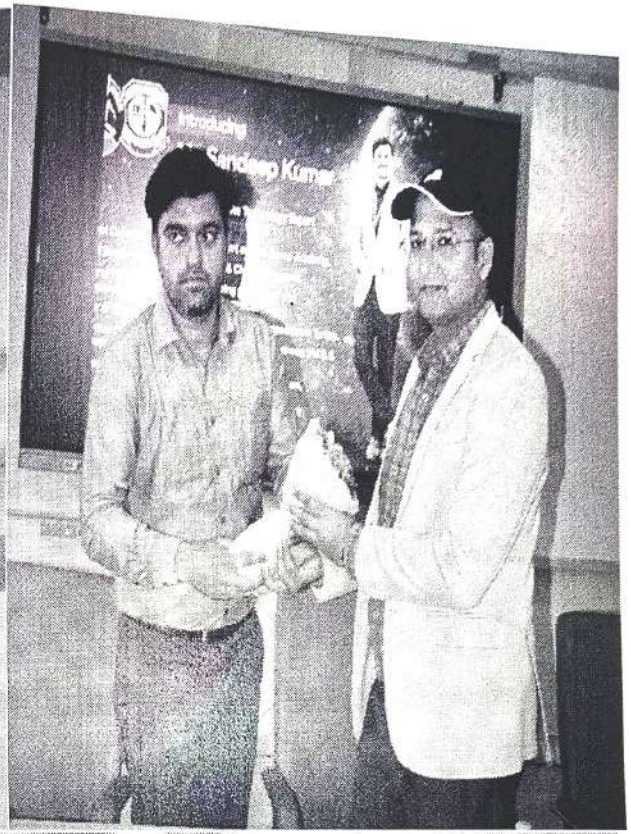


[Signature]
25/03/2026

[Signature]
25/05/2026



Handwritten signature and date:
28/03/2026
28/03/2026



[Signature]
25/03/2024

[Signature]
25/03/2024



[Handwritten signature]
25/03/2024

[Handwritten signature]
25/03/2024